पाठ -7 स्वयं प्रकाश (नेता जी का चश्मा)

"स्वयं प्रकाश" का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

स्वयं प्रकाश (जन्म: 7 जनवरी 1947, निधन: 28 दिसंबर 2019) हिंदी साहित्य के प्र सद्ध कथाकार, उपन्यासकार और नाटककार थे। उनका वास्त वक नाम शवकुमार मश्र था, ले कन वे स्वयं प्रकाश के नाम से प्र सद्ध हुए। उन्होंने हिंदी साहित्य में यथार्थवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से समृद्ध रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

जीवन परिचय:

- जन्म: 7 जनवरी 1947, ग्राम बघौली, जिला ब लया (उत्तर प्रदेश)
- शक्षा: इलाहाबाद वश्व वद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए.
- कार्यक्षेत्र: शुरुआत में अध्यापन, बाद में पूर्णका लक लेखन।
- निधन: 28 दिसंबर 2019, मुंबई

स्वयं प्रकाश ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक-आ र्थक वषमताओं, शोषण और मजदूर वर्ग के संघर्षों को गहराई से उकेरा। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना और वर्ग संघर्ष की स्पष्ट झलक मलती है।

प्रमुख रचनाएँ:

उपन्यास:

1. "सूत्रधार" (1978)
2. "अरण्य" (1981)
3. "जल टूटता हुआ" (1984)
4. "मेघा" (1991)
5. "दूसरा घर"

कहानी संग्रह:

1. "सुरंग" (1974)
2. "अपराध" (1979)
3. "कथा यात्रा"
4. "और अंत में"

नाटक:

1. "कबीरा खड़ा बाज़ार में"
2. "मोचीराम"

आलोचना:

- "कथा: स्वरूप और संवेदना"

साहित्यिक वशेषताएँ:

1. यथार्थवादी दृष्टिकोण: उनकी रचनाओं में समाज के यथार्थ चत्रण पर बल दिया गया है।
2. मजदूर वर्ग का चत्रण: उन्होंने श्र मकों, कसानों और निम्न वर्ग के संघर्षों को मुखरता से व्यक्त कया।
3. भाषा शैली: सरल, प्रवाहमयी और व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग।
4. मार्क्सवादी प्रभाव: उनके लेखन में वर्ग संघर्ष और सामाजिक न्याय की भावना स्पष्ट है।

पुरस्कार एवं सम्मान:

- "सूत्रधार" के लए मध्य प्रदेश साहित्य परिषद पुरस्कार (1979)
- "अरण्य" के लए श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार
- हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा सम्मानित

साहित्यिक योगदान:

स्वयं प्रकाश ने हिंदी कथा साहित्य को एक नई दिशा दी। उनकी रचनाएँ न केवल पाठकों को वचारोत्तेजक बनाती हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा भी देती हैं। उन्होंने साहित्य को जन-जन से जोड़ने का प्रयास कया और मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल दिया।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर 1: • चश्मेवाले को सेनानी न होते हुए भी 'कैप्टन' इस लए कहा जाता था क्यों क उसमें देशभक्ति का गहरा उत्साह था।
• वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का बहुत आदर करता था और नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करता था।

• देश के प्रति उसकी निष्ठा और त्याग कसी भी सेनानी या सैनिक से कम नहीं थी, और इसी कारण लोग उसे 'कैप्टन' पुकारते थे।

प्रश्न 2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के . लए मना कया था ले कन बाद में तुरंत रोकने को कहा -

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

उत्तर- (क) हालदार साहब पहले इस लए मायूस हो गए थे क्यों क वे यह सोच रहे थे क कस्बे के चौराहे पर सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा जरूर होगी, ले कन उनकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा। उनका मानना था क चश्मा पहनने वाला देशभक्त कैप्टन अब इस दुनिया में नहीं रहा, और अब कसी में ऐसी देशभक्ति की भावना नहीं बची है।

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर-(ख) मूर्ति पर सरकांडे का चश्मा यह संदेश देता है क लोगों के दिलों में अभी भी देशभक्ति की भावना जी वत है। भ वष्य की पीढ़ी इस धरोहर को संजोकर रखे हुए है और बच्चों में देशप्रेम की भावना बनी हुई है, जिससे यह स्पष्ट होता है क हमारे देश का भ वष्य सुर क्षत और उज्जवल है।

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर- (ग) हालदार साहब भावुक इस लये हो उठे क्यों क उनके दिल में अचानक निराशा की जगह एक नई आशा ने स्थान लया, और उनके हृदय की खुशी आँसुओं के रूप में उनकी आँखों से बह निकली। उन्हें यह आस्था हो गई क देशभक्ति की भावना आने वाली पीढ़ी के दिलों में भी पूरी तरह से समाहित है।

प्रश्न 3. आशय स्पष्ट कीजिए-

“बार - बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी - जवानी जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लए बिकने के मौके ढूँढती है।"

उत्तर 3- हालदार साहब बार-बार सोचते रहे क उस समाज का भ वष्य क्या होगा, जो उन लोगों का मजाक उड़ाता है जो अपने देश के लए घर-परिवार, जवानी, और जीवन यानी अपने सभी संसाधनों का ब लदान कर देते हैं। इसके साथ ही, वह ऐसे अवसरों की तलाश में रहते हैं, जिनसे उनका स्वार्थ सद्ध हो सके, चाहे इसके लए उन्हें अपनी नैतिकता से समझौता ही क्यों न करना पड़े। इस प्रकार, आज के समाज में लोग स्वार्थ की पूर्ति के लए अपना ईमान तक बेचने में हिच कचाते नहीं हैं, और देशभक्ति को मूर्खता मान लया जाता है।

प्रश्न 4. पानवाले का एक रेखा चत्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर 4- पानवाले की दुकान एक छोटे कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर स्थित थी। पानवाला एक मोटा, काले रंग का और खुश मज़ाज व्यक्ति था। उसकी बड़ी सी तोंद थी, और वह हमेशा पान चबाता रहता था, जिसके कारण उसके दाँत काले और लाल हो गए थे। वह स्थानीय बोली में बात करता था और अपने व्यवसाय में पूरी तरह व्यस्त रहता था। वह एक मजा कया इंसान था, जो कभी-कभी गंभीर बातें भी हलके अंदाज में करता था।

उदाहरण के तौर पर, वह कैप्टन जैसे देशभक्त को भी हंसी-मज़ाक में "लँगड़ा" और "पागल" कह देता था। हालां क, वह एक व्यक्तिवादी था और उसे देश के लए ब लदान देना पागलपन लगता था। इसके बावजूद, वह एक संवेदनशील इंसान भी था। भले ही वह कैप्टन का मजाक उड़ाता हो, ले कन उसके दिल में कैप्टन के प्रति आदर और आत्मीयता का भाव था। इसी लए, जब उसे कैप्टन की मृत्यु की खबर मली, तो उसकी आँखों में आंसू आ गए थे।

प्रश्न 5 " वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल !"

कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रति क्रया ल खए।

उत्तर 5:

• जब हालदार साहब ने कैप्टन के बारे में पूछा, तो पानवाले ने टिप्पणी की क वह लँगड़ा है, वह फ़ौज में क्या जाएगा, वह तो पागल है।

• पानवाले की यह टिप्पणी न केवल अनु चत थी, बल्कि इससे एक व्यक्ति के शारीरिक रूप से अक्षम होने को अपमानजनक रूप से प्रस्तुत कया गया।

• कैप्टन शारीरिक रूप से अक्षम था, इस कारण वह फ़ौज में नहीं जा सकता था। ले कन उसकी देशभक्ति की भावना इतनी प्रबल थी क वह कसी भी सैनिक से कम नहीं था।

• पानवाला उसकी देशभक्ति को पागलपन मान रहा था। यह वचार उसकी स्वार्थ पूर्ण मान सकता को दर्शाता है, जो पूरी तरह से गलत है।

• वास्तव में, देश के प्रति अपार त्याग और समर्पण रखने वाला व्यक्ति श्रद्धा का पात्र है, न क उपहास का।

यह उत्तर पानवाले की टिप्पणी को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, साथ ही यह बताता है क शारीरिक अक्षमता से अ धक महत्वपूर्ण एक व्यक्ति की मान सकता और देशप्रेम होता है।

रचना और अ भव्यक्ति

प्रश्न 6. निम्न ल खत वाक्य पात्रों की कौन-सी वशेषता की ओर संकेत करते हैं-

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

उत्तर "क) हल्दार साहब का हमेशा चौराहे पर रुककर नेताजी को देखना यह दर्शाता है क उनके भीतर देशभक्ति की गहरी भावना थी और वे स्वतंत्रता संग्राम के महान नायकों का दिल से सम्मान करते थे।"

(ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सर झुकाकर अपनी धोती के सरे से आँखें पोंछता हुआ बोला- साहब! कैप्टन मर गया ।

उत्तर- (ख) यहां पानवाले का कैप्टन की मृत्यु पर उदास हो जाना और आँसू पोंछते हुए सर झुका लेना यह दर्शाता है क पानवाले के दिल में कैप्टन के प्रति गहरी श्रद्धा और आत्मीयता थी। वह कैप्टन की देशभक्ति से प्रभा वत था और उसे सम्मानित करता था। इस प्रकार, पानवाले की संवेदनशीलता और देशप्रेम की भावना को इस स्थिति से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

(ग) कैप्टन बार बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था ।

उत्तर- (ग) यह संकेत देना क कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगाते थे, यह दर्शाता है क वह देश के लए ब लदान देने वाले लोगों के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। उनके दिल में देशभक्ति और त्याग की भावना पूरी तरह समाई हुई थी।

प्रश्न 7. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उसके मानस पटल पर उसका कौन-सा चत्र रहा होगा, अपनी कल्पना से ल खए।

उत्तर 7-

• जब तक हालदार साहब ने कैप्टन से मलकर उन्हें देखा नहीं था, तब तक उनके मन में कैप्टन की एक मजबूत और मस्कुलर शारीरिक बनावट की धृष्ट और प्रभावशाली छ व बनी हुई थी।

• उन्हें लगता था क कैप्टन एक मंझे हुए, बलशाली और लंबी कद-काठी वाले व्यक्ति होंगे, जो हमेशा सैनिकों के जैसे पहनावे में रहते होंगे। उनके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें होंगी, और उनकी आँखों में तेज़ चमक होगी। उनकी आवाज़ भी अत्य धक प्रभावशाली और गहरी होगी।

प्रश्न 8. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर कसी न कसी क्षेत्र के प्र सद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन -सा हो गया है-

(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

उत्तर-(क)

• इस प्रकार की मूर्ति स्था पत करने का मुख्य उद्देश्य यह होता है क हम उस महान व्यक्तित्व की यादें सहेज कर रखें।

• यह हमें याद दिलाता है क उस महापुरुष ने देश और समाज की भलाई के लए कन- कन महान कार्यों का योगदान दिया।

• उनके व्यक्तित्व से प्रेरित होकर हम भी समाज और राष्ट्र की उन्नति के लए अच्छे कार्य करें।

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर कस व्यक्ति की मूर्ति स्था पत करवाना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर- (ख)

• मैं अपने क्षेत्र के मुख्य चौराहे पर महात्मा गांधी जी की मूर्ति स्था पत करवाना चाहूँगा।

• इसका मुख्य कारण यह है क आज के समाज में हिंसा, झूठ, स्वार्थ, वैमनस्य, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं, ऐसे में गांधी जी के वचार और आदर्श और भी महत्वपूर्ण हो गए हैं।

• गांधी जी की मूर्ति की स्थापना से लोगों में सत्य, अहिंसा, सदाचार और सांप्रदायिक सौहार्द जैसी सकारात्मक भावनाओं का वकास होगा। इससे समाज और देश का माहौल सुधरेगा और सबका जीवन बेहतर होगा।

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर- (ग): यह हमारा कर्तव्य होना चाहिए क हम मूर्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान का ध्यान रखें।

• हमें न तो स्वयं उस मूर्ति का अपमान करना चाहिए, न ही उसे नुकसान पहुँचाना चाहिए, और न ही दूसरों को ऐसा करने की अनुमति देनी चाहिए।

• हमें उस मूर्ति के प्रति पर्याप्त श्रद्धा व्यक्त करनी चाहिए और उस महापुरुष के आदर्शों का पालन करते हुए खुद भी उनके मार्ग पर चलना चाहिए, साथ ही दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए।

• महापुरुष के जन्मदिवस पर हमें उस मूर्ति की साफ-सफाई करनी चाहिए, उस पर फूल चढ़ाने चाहिए, और उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लए एक सभा आयोजित करनी चाहिए।

प्रश्न 9. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में कसी न कसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे- सार्वजनिक संप त को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि । अपने जीवन-जगत से जुडे ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए ।

उत्तर **9:**

• हम सार्वजनिक संप त की रक्षा करके अपने देश से प्रेम का प्रदर्शन करते हैं।

• हम पार्कों को गंदा नहीं करते और कूड़े को सही स्थान पर ही डालते हैं।

• हम सड़कों पर केले के छिलके या अन्य कचरा नहीं फेंकते और ना लयों में भी कोई चीज़ नहीं डालते।

• हम पेड़ों को नहीं काटते, बल्कि स्वयं वृक्षारोपण करते हैं और दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।

• हम शक्षा का प्रचार-प्रसार करते हैं और अनपढ़ लोगों को पढ़ाने का प्रयास करते हैं।

• हम बाल मजदूरी करने वाले बच्चों को शोषण से मुक्त करने के लए काम करते हैं।

• हम समाज में भाईचारे को बढ़ावा देने के लए छुआछूत और सांप्रदायिकता को समाप्त करने की को शश करते हैं और सबके साथ समानता और प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं।

• हमें जो भी कार्य सौंपा जाए, उसे ईमानदारी और निष्ठा से करते हैं। इस तरह से हम अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।

• अगर हमें कसी भी तरह की गैरकानूनी गति व ध का पता चले, तो हम पु लस को सू चत करके कानून की मदद से उसे रोकने का प्रयास करते हैं।

• हम नशे के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करते हैं और स्वयं तथा अपने मत्रों को नशे से दूर रखते हैं।

• बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय हम अपने साथी और समाज की मदद के लए स क्रय रूप से काम करते हैं।

इस प्रकार के अनेक अच्छे कार्यों के जरिए हम अपना देशप्रेम प्रद र्शत कर सकते हैं।

प्रश्न 10. निम्न ल खत पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में ल खए-

कोई गराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन कधर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर 10- यह पंक्तियाँ स्थानीय बोली में लखी गई हैं, जिनमें कुछ वशेष शब्दों और अ भव्यक्तियों का उपयोग हुआ है। इन्हें मानक हिंदी में इस प्रकार लखा जा सकता है:

"कोई ग्राहक आ गया, सम झए। उसे चौड़ी चौखट चाहिए। तो कैप्टन इसे कहां से लाएगा? फर उसे मूर्तिवाला दे दिया। वहां दूसरा व्यक्ति बिठा दिया।"

प्रश्न 11. 'भई खूब! क्या आइ डया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए क एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर 11-

- जब एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्द शा मल होते हैं, तो यह उस भाषा की भावनाओं और वचारों को व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ाता है।
- इससे भाषा का शब्द भंडार भी वस्तृत होता है।
- भाषा का रूप और भी आकर्षक बन जाता है।
- इसके परिणामस्वरूप भाषा में एक सुंदर प्रवाह और लय उत्पन्न होती है।

भाषा - अध्ययन

प्रश्न 12. निम्न ल खत वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए-

(क) नगरपा लका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।

(ख) कसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय कया गया होगा।

(ग) यानी चश्मा तो था ले कन संगमरमर का नही था।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सल सले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

उत्तर 12-

	निपात	वाक्य
	(क) श्री	यदि हम परिश्रम करते हैं तो सफल भी होते हैं।
	(ख) ही	उसने वापस घर लौटना ही उ चत समझा।
	(ग) नहीं	अँगूठी तो थी ले कन सोने की नहीं थी।
	(घ) भी, नहीं	सुनीता अब भी नहीं लख सकी है।
	(ङ) तक	मुकेश दो दिन तक बुखार में वैसे ही तपता रहा।

प्रश्न 13. निम्न ल खत वाक्यों को कर्मवाच्य में बद लए-

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फट कर देता है।

(ख) पानवाला नया पान खा रहा था।

(ग) पानवाले ने साफ़ बता दिया था।

(घ) ड्राईबर ने जोर से ब्रेक मारे ।

(ङ) नेताओं ने देश के लए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(च) हालदार साहब ने चश्मेवाले को देशभक्ति का सम्मान कया।

उत्तर 13-

(क) उसने अपनी छोटी सी दुकान में उपलब्ध सी मत फ्रेमों में से एक में नेताजी की मूर्ति को फट कर दिया।
(ख) पानवाले से ताजा पान लया जा रहा था।
(ग) पानवाले ने स्पष्ट रूप से बता दिया था।
(घ) ड्राइवर ने अचानक से ब्रेक लगाकर वाहन को रोका।
(ङ) नेताजी ने देश की सेवा में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।
(च) हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति की सराहना की।

प्रश्न 14. नीचे लखे वाक्यों को भाववाच्य में बद लए-

जैसे अब चलते हैं। अब चला जाए।

(क) माँ बैठ नहीं सकती।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

(ग) चलो, अब सोते हैं।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

उत्तर 14-

(क) माँ के पास बैठना अब मुझसे नहीं हो पाता।

(ख) मुझसे यह दृश्य देखा नहीं जाता।

(ग) अब सोने का समय हो गया है, चलो सो जाते हैं।

(घ) माँ के सामने मैं रो भी नहीं सकता।

पाठेतर स क्रयता

प्रश्न- लेखक का अनुमान है क नेताजी की मूर्ति बनाने का काम मजबूरी में ही स्थानीय कलाकार को दिया गया-

(क) मूर्ति बनाने का काम मलने पर कलाकर के क्या भाव रहे होंगे?

उत्तर- (क)

• जब कलाकार को मूर्ति बनाने का कार्य सौंपा गया होगा, तो वह स्वयं को ग र्वत महसूस कर रहा होगा।
• उसे यह अहसास हो रहा होगा क उसे एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है।
• उसके मन में यह वचार आ रहा होगा क उसे इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभाना चाहिए, ता क जो वश्वास उस पर रखा गया है, वह उस पर खरा उतर सके।
• उसे यह महसूस हो रहा होगा क एक महान देशभक्त महापुरुष को श्रद्धांज ल अ र्पत करने का यह सुनहरा अवसर उसे प्राप्त हुआ है।
• वह सोच रहा होगा क मूर्ति को इस तरह से सुंदर और वास्त वक बनाऊं, जिससे लोग उस पर गर्व महसूस कर सकें।

(ख) हम अपने इलाके के शल्पकार, संगीतकार, चत्रकार एवं दूसरे कलाकारों के काम को कैसे महत्त्व और प्रोत्साहन दे सकते हैं, ल खए।

उत्तर (ख) हम अपने क्षेत्र के शल्पकारों, संगीतकारों, चत्रकारों और अन्य कलाकारों को निम्न ल खत तरीकों से सम्मानित और प्रोत्साहित कर सकते हैं:

• उनकी कृतियों की सुंदरता और वशेषता की सराहना करके।
• उन्हें और बेहतर बनाने के लए उपयोगी सुझाव देकर।
• उनकी कृतियों की प्रदर्शनी आयोजित करके।
• उनके काम के वक्रय की व्यवस्था करके।
• संगीत क्षेत्र के कलाकारों के कार्यक्रमों का आयोजन करके।
• समाचार पत्र, टीवी और रे डयो के माध्यम से उनकी कृतियों को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करके।
• सार्वजनिक कार्यक्रमों में उन्हें पुरस्कार और सम्मान देकर।
• प्रशासन से उन्हें सम्मानित करने के लए प्रयास करके।

प्रश्न: आपके वद्यालय में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्यार्थी हैं। उनके लए वधालय परिसर और कक्षा-कक्ष में कस तरह के प्राव्धान कए जाएँ, प्रशासन को इस संदर्भ में पत्र द्वारा सुझाव दीजिए।

उत्तर-

श्रीमान प्रधानाचार्य,

वषय: शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए वद्यालय परिसर और कक्षा-कक्ष में प्रावधानों के संबंध में सुझाव

सादर प्रणाम,

मैं इस पत्र के माध्यम से वद्यालय में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए कुछ आवश्यक प्रावधानों के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना चाहता/चाहती हूं। यह कदम हमारे वद्यालय को सभी वद्या र्थयों के लए अ धक समावेशी और सुलभ बनाने के उद्देश्य से हैं, ता क वे अपनी पढ़ाई में पूरी तरह से भाग ले सकें।

1. वकलांगता अनुकूल प्रवेश द्वार और रास्ते: शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए वशेष प्रवेश द्वार बनाए जाएं, जिससे उन्हें सहायक उपकरणों का उपयोग करते समय कसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। साथ ही, वद्यालय के सभी मार्गों को वकलांगता-अनुकूल बनाने के लए रैंप का निर्माण कया जाए।

2. कक्षा-कक्ष में समायोजन: कक्षा में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए वशेष सीटों की व्यवस्था की जाए, ता क वे आसानी से कक्षा में भाग ले सकें। इसके अलावा, कक्षा में वशेष शै क्षक सामग्री, जैसे ऊंचे मेज और कु र्सयां, सुनिश्चित की जाएं।

3. सहायक उपकरणों का प्रावधान: शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए सहायक उपकरणों जैसे व्हीलचेयर, बैसाखी, सुनने और देखने में सहायक उपकरण, आदि की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

4. वद्यालय में शारीरिक गति व धयों का समावेश: वशेष शक्षा के तहत शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए खेलकूद और शारीरिक गति व धयों का आयोजन कया जाए। इसके लए उ चत प्र शक्षण और संसाधन प्रदान कए जाएं।

5. शक्षकों का प्र शक्षण: सभी शक्षकों को शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के साथ काम करने के लए प्र शक्षण दिया जाए, ता क वे इन वद्या र्थयों के शै क्षक और व्यक्तिगत वकास में सहायता कर सकें।

6. आपातकालीन सेवाओं का प्रबंध: कसी भी आपातकालीन स्थिति में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लए वशेष प्रबंध कए जाएं, जैसे प्राथ मक च कत्सा कट और च कत्सा सहायता उपलब्ध कराना।

मैं आशा करता/करती हूं क इन सुझावों को ध्यान में रखते हुए वद्यालय प्रशासन द्वारा शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वद्या र्थयों के लए उ चत प्रावधान कए जाएंगे, ता क वे अपने शै क्षक जीवन को समु चत रूप से आगे बढ़ा सकें।

धन्यवाद।

सादर, [आपका नाम] [कक्षा और वषय का नाम]
[वद्यालय का नाम]

प्रश्न • कैप्टन फेरी लगाता था ।

फेरीवाले हमारे दिन-प्रतिदिन की बहुत-सी जरूरतों को आसान बना देते हैं | फेरीवालों के योगदान व समस्याओं पर एक संपादकीय लेख तैयार कीजिए।

उत्तर - फेरीवालों का योगदान और समस्याएँ

फेरीवाले समाज के महत्वपूर्ण सदस्य होते हैं, जो हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन को सरल और सुगम बनाने में अपना योगदान देते हैं। वे वशेषकर ऐसे सामान बेचते हैं, जो आमतौर पर बाज़ार में नहीं मलते या जो समय के हिसाब से तत्काल चाहिए होते हैं। चाहे वह फल, सब्जियाँ, घरेलू उपयोग का सामान हो या फर ठंडे-गर्म पेय, फेरीवाले इन सभी की आसान उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं। वे न केवल स्थानीय स्तर पर व्यापार करते हैं, बल्कि समाज में एक अहम भू मका भी निभाते हैं।

फेरीवालों का योगदान:

1. समानता में वृद् ध: फेरीवाले उन क्षेत्रों में व्यापार करते हैं, जहाँ बड़े बाज़ारों या दुकानों की पहुँच सी मत होती है। इससे समाज के गरीब वर्ग को आवश्यक वस्त्र, खाद्य सामग्री, और अन्य सामान सस्ते दामों में मल जाता है।

2. आ र्थक समृद् ध: फेरीवाले अक्सर छोटे व्यापारियों के रूप में काम करते हैं, जो उनकी छोटी ले कन निरंतर आ र्थक गति व धयों से समृद् ध ला सकते हैं। ये व्यवसाय उनके परिवारों के लए रोज़ी-रोटी का जरिया होते हैं।

3. स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा: फेरीवाले स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं, क्यों क वे आमतौर पर स्थानीय उत्पादों को बेचते हैं और स्थानीय समुदाय से जुड़े होते हैं।

4. सु वधा की उपलब्धता: उनका काम केवल सामान बेचने तक सी मत नहीं रहता। वे समय पर घर के दरवाजे तक सामान पहुंचा कर उपभोक्ताओं के समय की बचत भी करते हैं।

फेरीवालों की समस्याएँ:

1. अवैध व्यवसाय: फेरीवाले अ धकांश स्थानों पर अवैध रूप से व्यापार करते हैं। प्रशासनिक अ धकारियों द्वारा उन्हें बार-बार अवैध तरीके से काम करने का आरोप लगाया जाता है।

2. भ्रष्टाचार और पु लस दबाव: कई फेरीवाले पु लस और अन्य सरकारी अ धकारियों से परेशान होते हैं, जो उन्हें अवैध काम करने के कारण उत्पी ड़त करते हैं और कभी-कभी रिश्वत मांगते हैं।

3. बाजार से प्रतिस्पर्धा: फेरीवालों को कभी-कभी बड़े दुकानदारों और मॉल्स से कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जहाँ पर कीमतें कम होती हैं और समानों की गुणवत्ता बेहतर होती है।

4. स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी खतरे: फेरीवाले खुले स्थानों पर काम करते हैं, जहां पर्यावरणीय प्रदूषण, सड़कों पर यातायात, और मौसम के कारण कई स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अलावा, उन्हें सुरक्षा की पर्याप्त सु वधाएँ भी उपलब्ध नहीं होतीं।

www.ncertsolutionhub.in

5. संवेदनशील कार्यशील परिस्थितियाँ: अक्सर फेरीवाले गर्मी, सर्दी, वर्षा, और रात के समय भी काम करते हैं, जिससे उनकी शारीरिक और मान सक स्थिति पर दबाव पड़ता है।

निष्कर्ष:

फेरीवाले समाज के अ वस्मरणीय सदस्य हैं, जो हमें आसानी से वस्त्र, खाद्य, और अन्य आवश्यक चीजें उपलब्ध कराते हैं। हालां क, उनकी परिस्थितियाँ और समस्याएँ चुनौतीपूर्ण होती हैं। समाज और सरकार को चाहिए क वे फेरीवालों के लए एक सुर क्षत और व्यवस्थित कार्य वातावरण सुनिश्चित करें, ता क वे अपने काम को सम्मानजनक तरीके से कर सकें और अपनी समस्याओं का समाधान पा सकें।

प्रश्न • नेताजी सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक प्रोजेक्ट बनाइए ।

उत्तर - नेताजी सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रोजेक्ट

1. प्रस्तावना:

नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता और देशभक्त थे, जिनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता के लए अतुलनीय है। उनका जीवन संघर्ष, साहस, और समर्पण से भरा हुआ था। उनका उद्देश्य भारतीयों को स्वतंत्रता दिलाना था, और इसके लए उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खलाफ युद्ध का साह सक कदम उठाया।

2. प्रारं भक जीवन:

सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक, उड़ीसा में हुआ था। उनके पता, जनकी नाथ बोस, एक सफल वकील थे, और उनकी मां, प्रभावती देवी, एक धा र्मक और श क्षत महिला थीं। बोस की प्रारं भक शक्षा कटक में हुई और बाद में वे कलकत्ता वश्व वद्यालय के प्रे सडेंसी कॉलेज में पढ़ने गए। वे बचपन से ही मेधावी और राष्ट्रीय वचारों से प्रभा वत थे।

3. शक्षा और वचारधारा:

सुभाष बोस ने अपनी प्रारं भक शक्षा कटक के रेवरेन्स कॉलेज से प्राप्त की, इसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज वश्व वद्यालय से स्नातक की डग्री प्राप्त की। यहां उनकी मुलाकात सशस्त्र स्वतंत्रता संग्राम के वचारकों से हुई, जिन्होंने उनकी सोच और वचारधारा को प्रभा वत कया। बोस का मानना था क भारतीय स्वतंत्रता केवल अहिंसा के द्वारा प्राप्त नहीं हो सकती, बल्कि इसके लए संघर्ष और ब लदान की आवश्यकता थी।

4. स्वतंत्रता संग्राम में योगदान:

नेताजी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान बेहद महत्वपूर्ण था। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस में कार्य कया, ले कन बाद में वे गांधीजी के अहिंसा के सद्धांत से असहमत हो गए और अपनी स्वतंत्र वचारधारा अपनाई। उन्होंने सुभाष चंद्र बोस को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुना, ले कन बाद में उनका मतभेद और कांग्रेस से अलगाव हुआ।

उनके द्वारा भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का गठन कया गया, जिसे जापान के समर्थन से ब्रिटिश साम्राज्य के खलाफ युद्ध में उतारा गया। INA ने ब्रिटिश सेना के खलाफ कई महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लया, हालां क वे पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सके, ले कन उनके साहस ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

5. भारतीय राष्ट्रीय सेना **(INA):**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 1942 में भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य से भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करना था। उन्होंने INA को एक सशस्त्र बल के रूप में संगठित कया और जापानी सेना के साथ मलकर ब्रिटिशों के खलाफ युद्ध में भाग लया। उनके नेतृत्व में INA ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया।

6. वदेश नीति और जापान से सहयोग:

नेताजी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लए जापान से सहयोग लया। उन्होंने 'आजाद हिंद सरकार' का गठन कया और बर्मा, थाईलैंड, मले शया और संगापुर जैसे देशों में भारतीयों को संगठित कया। उनका उद्देश्य था क भारतीयों को एकजुट कर ब्रिटिश साम्राज्य के खलाफ सशस्त्र संघर्ष कया जाए।

7. मृत्यु और वरासत:

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु के बारे में व भन्न वचार हैं। कई लोग मानते हैं क 18 अगस्त 1945 को ताइपे में एक वमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई, ले कन इस मामले में अब भी कुछ ववाद हैं। बावजूद इसके, उनका योगदान और उनके वचार आज भी भारतीय राजनीति और समाज में गहरे प्रभाव डालते हैं।

8. उपसंहार:

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में हमेशा याद कया जाएगा। उनका साहस, नेतृत्व और देशभक्ति भारतीयों के लए प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। वे केवल एक नेता नहीं, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

सन्दर्भ:

1. नेताजी सुभाष चंद्र बोस के भाषण
2. भारतीय राष्ट्रीय सेना और आजाद हिंद सरकार का इतिहास
3. नेताजी के जीवन और संघर्ष पर आधारित कताबें

सुझा वत चत्र:

- सुभाष चंद्र बोस की तस्वीर
- INA के सैनिकों की तस्वीर

- आजाद हिंद सरकार के झंडे की तस्वीर

प्रश्न- अपने घर के आस-पास दे खए और पता लगाइए क नगरपा लका ने क्या-क्या काम करवाए हैं? हमारी भू मका उसमें क्या हो सकती है?

उत्तर-

• हमारे आसपास की नगर पा लका ने कई महत्वपूर्ण कार्य कए हैं, जिनसे हमें बहुत सु वधा मली है:

(i) नगर पा लका ने नागरिकों की सु वधा के लए नए रास्ते और सड़कें बनवाई हैं।
(ii) सड़कों के कनारे सुंदर लैंप-पोस्ट और पेड़ लगाए गए हैं।
(iii) पेयजल की अच्छी व्यवस्था की गई है। हर घर में पानी के कनेक्शन के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों पर हैंडपंप भी लगाए गए हैं।
(iv) गंदे पानी के निकास के लए ना लयों और सीवर सस्टम का निर्माण कया गया है।
(v) कई छोटे-छोटे पार्क बनाए गए हैं, जहां लोग समय बिता सकते हैं।
(vi) प्राथ मक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना की गई है और कम्यूनिटी हॉल बनाए गए हैं।

• इन कार्यों को लेकर हमारी भी कुछ जिम्मेदारियाँ हैं, जिन्हें हम निभा सकते हैं:

(i) हमें सार्वजनिक संप त्त को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।
(ii) पार्कों और सड़कों पर कचरा न फैलाएँ, बल्कि उसे सही जगह पर फेंकें।
(iii) लैंप-पोस्ट्स को दिन में बंद रखें।
(iv) पेयजल का संरक्षण करें और उसका दुरुपयोग न होने दें।
(v) ना लयों और सीवरों को कचरे से मुक्त रखें ता क वे जाम न हो जाएं।
(vi) हम दूसरों को भी सार्वजनिक सु वधाओं की सुरक्षा और सुंदरता के प्रति जागरूक करें।

प्रश्न- नीचे दिए गए निबंध का अंश पढ़िए और सम झए क गद्य की व वध वधाओं में एक ही भाव को अलग-अलग प्रकार से कैसे व्यक्त कया जा सकता है-

देश-प्रेम

देश-प्रेम है क्या? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलंबन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन पर्वत सहित सारी भू म । यह प्रेम कस प्रकार का है? यह साहचर्यगत प्रेम है। जिनके बीच हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते रहते हैं, जिनका हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, सारांश यह है क जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है, उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अंतः करण का कोई भाव है तो यही हो सकता है। यदि यह नहीं है तो वह कोरी बकवास या कसी और भाव के संकेत के लए गढ़ा हुआ शब्द है। यदि कसी को अपने देश से सचमुच प्रेम है तो उसे अपने देश

के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सबसे प्रेम होगा, वह सबको चाहभरी दृष्टि से देखेगा; वह सबकी सुध करके वदेश में आँसू बहाएगा। जो यह भी नहीं जानते क कोयल कस च ड़या का नाम है, जो यह भी नहीं सुनते क चातक कहाँ चल्लाता है, जो यह भी आँख भर नहीं देखते क आम प्रणय-सौरभपूर्ण मंजरियों से कैसे लदे हुए हैं, जो यह भी नहीं झाँकते क कसानों के झोंपड़ों के भीतर क्या हो रहा है, वे यदि बस बने-ठने मत्रों के बीच प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर देश-प्रेम का दावा करें तो उनसे पूछना चाहिए क भाइयों! बिना रूप परिचय का यह प्रेम कैसा? जिनके दुख-सुख के तुम कभी साथी नहीं हुए उन्हें तुम सुखी देखना चाहते हो, यह कैसे समझे ? उनसे कोसों दूर बैठे-बैठे, पड़े पड़े या खड़े-खड़े तुम वलायती बोली में ' अर्थशास्त्र' की दुहाई दिया करो पर प्रेम का नाम उसके साथ न घसीटो। प्रेम हिसाब- कताब नहीं है। हिसाब- कताब करने वाले भाडे पर भी मल सकते हैं, पर प्रेम करने वाले नहीं। हिसाब- कताब से देश की दशा का ज्ञान मात्र हो सकता है। हित चंतन और हित-साधन की प्रवृ त कोरे ज्ञान से भन्न है। वह मन के वेग का भाव पर अवलंबित है, उसका संबंध लोभ या प्रेम से है, जिसके बिना अन्य पक्ष में आवश्यक त्याग का उत्साह हो नहीं सकता।

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल

उत्तर: इस निबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने देश-प्रेम की गहरी और वस्तृत समझ को व्यक्त कया है। वे यह बताते हैं क देश-प्रेम एक साधारण प्रेम जैसा ही होता है, ले कन इसका आलंबन या कारण समग्र देश है—मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, नदियाँ, पर्वत और समस्त भू म। वे इसे 'साहचर्यगत प्रेम' मानते हैं, जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन में हमें अपने देश के हर पहलू से जुड़ने का अवसर देता है। यह प्रेम एक प्राकृतिक जुड़ाव से उत्पन्न होता है और केवल ज्ञान या आ र्थक आंकड़ों तक सी मत नहीं होता, बल्कि यह हमारे दिल से जुड़ा हुआ होता है।

इस निबंध का संदेश यह है क यदि कोई व्यक्ति अपने देश से वास्त वक प्रेम करता है, तो उसे केवल आ र्थक आंकड़ों या व्यापारिक मापदंडों के आधार पर देश का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। देश-प्रेम एक गहरा भावनात्मक और संवेदनशील अनुभव होता है, जो केवल सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मानवीय पहलुओं से जुड़ा होता है। प्रेम का यह रूप सर्फ आंकड़ों और तर्कों से नहीं, बल्कि वास्त वक अनुभवों और समाज की भलाई में योगदान के माध्यम से व्यक्त होता है।

इस निबंध के माध्यम से गद्य की वधा में यह वचार व्यक्त कया गया है क देश-प्रेम का वास्त वक रूप केवल ज्ञान या सांस्कृतिक संकेतों से नहीं, बल्कि उस देश के हर जीव, वस्तु और व्यक्ति के साथ गहरे संबंध से आकार लेता है।

पाठ -7 स्वयं प्रकाश (नेता जी का चश्मा) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर

प्रश्न **1:** नेताजी की मूर्ति पर हर बार चश्मा क्यों बदल जाता था?

उत्तर: स्वयं प्रकाश जी ने इस कहानी में दिखाया क नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बदलने का कारण वैफप्टन नामक एक बूढ़े चश्मेवाले की भावुक देशभक्ति थी। वह ग्राहकों को मूर्ति जैसा चश्मा देने के लए मूर्ति से चश्मा हटाकर दे देता और बाद में कोई नया चश्मा लगा देता।

प्रश्न **2:** मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल मूर्ति में चश्मा क्यों नहीं बना पाए?

उत्तर: स्वयं प्रकाश जी के अनुसार, मास्टर मोतीलाल संगमरमर से मूर्ति तो बना पाए, ले कन पारदर्शी पत्थर का चश्मा बनाने में तकनीकी असमर्थता या समय की कमी के कारण असफल रहे। इसी लए मूर्ति पर असली चश्मा लगाया गया।

प्रश्न **3:** वैफप्टन चश्मेवाले के व्यवहार से उसकी देशभक्ति का क्या संकेत मलता है?

उत्तर: स्वयं प्रकाश जी ने वैफप्टन के माध्यम से सच्ची देशभक्ति का चत्रण कया। वह लंगड़ा और गरीब था, ले कन नेताजी की मूर्ति को "अधूरी" नहीं देख सकता था। उसका चश्मा बदलने का यह अनोखा तरीका उसकी निस्वार्थ भावना को दर्शाता है।

प्रश्न **4:** कहानी के अंत में नेताजी की मूर्ति पर चश्मा क्यों नहीं था?

उत्तर: स्वयं प्रकाश जी ने इस मा र्मक अंत के जरिए सामाजिक उदासीनता को उजागर कया। वैफप्टन की मृत्यु के बाद मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कोई नहीं था, जो यह दर्शाता है क सच्ची श्रद्धा अक्सर गुमनाम लोगों में होती है।

प्रश्न **5:** कहानी 'नेताजी का चश्मा' कस भावना को प्रमुखता से व्यक्त करती है?

उत्तर: स्वयं प्रकाश जी की यह कहानी देशप्रेम, सामाजिक उपेक्षा और मानवीय संवेदना का संगम है। वैफप्टन जैसा साधारण व्यक्ति अपनी छोटी-सी पहल से बताता है क देशभक्ति दिखावे की नहीं, हृदय से की जाती है।

प्रश्न **6:** स्वयं प्रकाश की कहानी 'नेताजी का चश्मा' समाज को क्या संदेश देती है?

उत्तर: स्वयं प्रकाश द्वारा ल खत कहानी 'नेताजी का चश्मा' समाज को यह संदेश देती है क असली देशभक्ति कसी बड़े मंच या भाषण में नहीं, बल्कि छोटे-छोटे कार्यों में छिपी होती है। वैफप्टन जैसे सामान्य व्यक्ति के कार्य से यह स्पष्ट होता है क देश के प्रतीकों का सम्मान और सेवा बिना कसी प्रचार के भी की जा सकती है।

प्रश्न **7:** कहानी में वैफप्टन की भू मका क्या प्रती कत करती है?

उत्तर: वैफप्टन की भू मका एक सामान्य नागरिक की सच्ची देशभक्ति और भावनात्मक लगाव को प्रती कत करती है। वह भले ही लंगड़ा और बूढ़ा था, ले कन नेताजी की मूर्ति को पूरा मानने के लए हर संभव प्रयास करता था। स्वयं प्रकाश ने उसकी भू मका के माध्यम से यह दिखाया है क छोटे लोग भी बड़े आदर्शों को जी वत रख सकते हैं।

प्रश्न **8:** स्वयं प्रकाश ने कहानी में हास्य और व्यंग्य का प्रयोग कैसे कया है?

उत्तर: स्वयं प्रकाश ने 'नेताजी का चश्मा' में हल्के-फुल्के हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज की उदासीनता पर चोट की है। नेताजी की मूर्ति पर बार-बार चश्मा बदलना और वैफप्टन की भावनात्मक देशभक्ति कहानी को रोचक भी बनाती है और सोचने पर भी मजबूर करती है। लेखक ने साधारण पात्रों के माध्यम से गहरे संदेश दिए हैं।

प्रश्न 9: चश्मे के बहाने लेखक क्या दर्शाना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक स्वयं प्रकाश चश्मे के बहाने यह दर्शाना चाहते हैं क देश के नायकों को केवल मूर्ति बनाकर नहीं, उनके वचारों और प्रतीकों का भी सम्मान करना चाहिए। वैफप्टन का मूर्ति पर चश्मा लगाना केवल वस्तु नहीं, बल्कि श्रद्धा और जागरूकता का प्रतीक है। यह कहानी जागरूक नागरिकता का संदेश देती है।

प्रश्न 10: कहानी का शीर्षक 'नेताजी का चश्मा' कतना उपयुक्त है?

उत्तर: 'नेताजी का चश्मा' शीर्षक अत्यंत उपयुक्त है क्यों क पूरी कहानी इसी प्रतीकवस्तु के इर्द- गर्द घूमती है। स्वयं प्रकाश ने चश्मे को नेताजी की पहचान और एक आम आदमी की देशभक्ति का माध्यम बनाया है। यह साधारण वस्तु पाठक के मन में असाधारण भावना और संवेदना जगा देती है।

प्रश्न 11: स्वयं प्रकाश की कहानी में मूर्ति के चश्मे को हटाने की प्र क्रया क्या दर्शाती है?

उत्तर: मूर्ति के चश्मे को बार-बार हटाया जाना यह दर्शाता है क समाज में देशभक्ति केवल दिखावे तक सी मत रह गई है। लोग नेताजी जैसी महान हस्तियों की प्रतिमाओं का सम्मान करने के बजाय केवल रस्म अदायगी करते हैं। स्वयं प्रकाश ने इस प्र क्रया के माध्यम से समाज की संवेदनहीनता पर व्यंग्य कया है।

प्रश्न 12: 'नेताजी का चश्मा' कहानी से लेखक स्वयं प्रकाश का दृष्टिकोण क्या स्पष्ट होता है?

उत्तर: इस कहानी के माध्यम से स्वयं प्रकाश का दृष्टिकोण यह स्पष्ट होता है क सच्ची देशभक्ति और सम्मान छोटे कार्यों और साधारण लोगों के माध्यम से भी प्रकट हो सकती है। लेखक यह बताना चाहते हैं क यदि आम आदमी संवेदनशील और जागरूक हो, तो वह भी समाज में बड़ा बदलाव ला सकता है।

प्रश्न 13: कहानी में नेताजी की मूर्ति और चश्मा कस प्रतीक का काम करते हैं?

उत्तर: नेताजी की मूर्ति देशभक्ति, ब लदान और आदर्शों की प्रतीक है, जब क चश्मा उनके वचारों को देखने और समझने का माध्यम है। स्वयं प्रकाश ने इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से यह दर्शाया है क आदर्शों को जी वत रखना केवल भाषणों से नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप से सम्मान देने से संभव है।

प्रश्न 14: 'नेताजी का चश्मा' कहानी आज के समाज के लए कतनी प्रासं गक है?

उत्तर: यह कहानी आज के समाज में बहुत प्रासं गक है, जहाँ लोग केवल औपचारिकता निभाते हैं पर वास्त वक भावना का अभाव होता है। स्वयं प्रकाश ने दिखाया है क कैसे एक सामान्य व्यक्ति की सजगता समाज को एक मूल्यवान संदेश दे सकती है। यह कहानी आज भी देशभक्ति की असली परिभाषा सखाती है।

प्रश्न 15: लेखक ने वैफप्टन जैसे पात्र को क्यों चुना?

उत्तर: लेखक स्वयं प्रकाश ने वैफप्टन जैसे सामान्य और शारीरिक रूप से अक्षम पात्र को चुनकर यह दिखाया है क देशभक्ति केवल शक्तिशाली या श क्षत लोगों तक सी मत नहीं होती। वैफप्टन का चरित्र यह सद्ध करता है क भावना और लगन हो तो कोई भी देश की सेवा में अपना योगदान दे सकता है।